الم (1) ذٰلِكَ الْكِتَابُ لاَ رَيْبَ فِيهِ هُدًى لِلْمُتَّقِي (2) الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِالْغَيْبِ وَ يُقِيمُونَ الصَّلاَةَ وَ مِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنْفِقُونَ (3) وَ الَّذِينَ يُؤْمِنُونَ بِمَا أُنْزِلَ إلَيْكَ وَ مَا أُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ وَ بِالْآخِرَةِ هُمْ يُوقِنُونَ (4) أُولئِكَ عَلَى هُدًى مِنْ رَبِّهِمْ وَ أُولئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُونَ (5) إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا سَوَاءٌ عَلَيْهِمْ أَ أَنْذَرْتَهُمْ أُمْ لَمْ تُنْذِرْهُمْ لاَ يُؤْمِنُونَ (6) خَتَمَ اللَّهُ عَلَى قُلُوبِهِمْ وَ عَلَى سَمْعِهِمْ وَ عَلَى أَبْصَارِهِمْ غِشَاوَةٌ وَ لَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ (7)

A. L. M. This is the book; in it is guidance sure, without doubt, to those who fear Allah; who believe in the unseen, are steadfast in prayer, and spend out of what We have provided for them; and who believe in the revelation sent to thee, and sent before thy time, and (in their hearts) have the assurance of the hereafter. They are on (true) guidance, from their Lord, and it is these who will prosper. As to those who reject faith, it is the same to them

\*

whether thou warn them or do not warn them; they will not believe. Allah hath set a seal on their hearts and on their hearing, and on their eyes is a veil; great is the chastisement they (incur).

अलिफ़-लाम-मीम | यह अल्लाह की किताब है, इसमें कोई शक नहीं | हिदायत है उन परहेजगार लोगों के लिए जो गैब पर ईमान लाते हैं, नमाज कायम करते हैं, जो रिज्क हमने उनको दिया है, उसमें खर्च करते हैं, जो किताब तुमपर नाजिल की गई है (यानी कुरआन) और जो किताबें तुमसे पहले नाजिल की गई थीं उन सबपर ईमान लाते हैं, और आखिरत पर यकीन रखते हैं | ऐसे लोग अपने रब की तरफ़ से राहे-रास्त पर हैं और वही फ़लाह पानेवाले हैं | जिन लोगों ने (इन बातों को तसलीम करने से) इनकार कर दिया, उनके लिए यकसाँ है, खाह तुम उन्हें ख़बरदार करो या न करो, बहरहाल वे माननेवाले नहीं हैं | अल्लाह ने उनके दिलों और उनके कानों पर मुहर लगा दी है और आँखों पर परदा पड़ गया है | वे सख्त सजा के म्सतहिक हैं |